P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-X*June-2015

प्रेमचन्द की नारी भावना

सविता टाक
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
माणिक्य लाल वर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भीलवाड़ा (राजस्थान)

सारांश

प्रेमचंद ने अपने समस्त उपन्यासों में नारी को भारतीय जीवन मूल्यों से परिपूर्ण माना है। इसमें त्याग, सेवा, दया, करुणा, स्वाभिमान, सहनशीलता, एक निष्ठता का भाव है, जो भारतीय संस्कृति के गौरव का प्रतीक है। यह प्रेमचंद के उपन्यासों का मूल है। आज भी भारतीय नारी जीवन मूल्यों को अपनाते हुए सफलता की ओर अग्रसर हो रही है।

मुख्य शब्द : नारी शिक्षा, नवीन चेतना, अधिकार व कर्त्तव्यों के प्रति जागरुकता, आत्मगरिमा एवं सुधारवादी दृष्टिकोण।

परिचय

प्रेमचन्द मानवतावादी उपन्यासकार थे अतः उन्होंने जिस साहित्य का सर्जन किया, वह व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र सभी को सबल बनाने का सामर्थ्य रखता है। मानव का कल्याण उनके साहित्य का प्रमुख उद्देश्य है। हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द का स्थान इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि उनका साहित्य उनके युग का प्रतिनिधित्व करता है कि उन्होंने एक ओर उपन्यास विधा को नई दिशा प्रदान की तो दूसरी ओर मानव मूल्यों का चित्रण भी किया है। स्वतंत्रता संघर्षरत भारतीय समाज के क्रान्तद्रष्टा उपन्यासकार प्रेमचन्द ने नारी जीवन के सभी पक्षों पर दृष्टिपात किया। उनके रचनात्मक सोच की परिणति ही है कि रतन जैसी विधवा, सुमन जैसी वेश्या, समाज बहिष्कृत मुन्नी जैसी नारियों को प्रेमचन्द समाज में वरेण्य रूप में चित्रित करते हैं, नारी शताब्दियों से इतनी उपेक्षित रही, जिसका क्रय–विक्रय निर्जीव पदार्थों के समान होता रहा, जिसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व कुछ नहीं था, जो अपनी असमर्थता के कारण अमानवीय अत्याचार सहती पर मुख से कुछ तक न कहती, जिसे उसकी विवशता के कारण अबला कहकर पुकारा जाता, जो अपनी दीनता के कारण सहधर्मिणी के गौरवास्पद पद से च्युत होकर केवल भोग्या मात्र बनकर रह गई थी, उस दीन–हीन अबला में इतनी शक्ति कहाँ से आ गई; जिससे कि आज वह पुरुषों को नेतृत्व करने में भी समर्थ हो गई है। नारी के प्रति प्रेमचन्द के सहानुभूतिपूर्ण विशाल दृष्टिकोण की ही यह देन है कि नारी ने अपने खोये हुए गौरव को पुनः प्राप्त कर लिया और अब यह अर्धांगिनी, सहचरी, सहधर्मिणी एवं सहगामिनी के महत्त्वपूर्ण पद पर पुनः आसीन होने में समर्थ हो गई है। उसने उस योग्यता को प्राप्त कर लिया जिसके अर्जन से अपने विशुद्ध अर्थों में वह सहधर्मिणी बन गई है। प्रेमचन्द की करुणा स्त्री को वस्तु मात्र[1] के स्तर से उठाकर प्राणी स्तर तक लाई जो साहित्य में नारी को मानवी के रूप में स्थान दिलवाने में चेष्टारत रहा, नारी की नैसर्गिक कोमलता, करुणा, भावुकता, दया, ममता आदि का पुरुष पूर्णतया लाभ उठाते हुए शक्ति स्वरूपा नारी का दमन करता रहा है। प्रेमचन्द की नारी ने अपनी शक्ति को पहचाना। वह सामाजिक बंधनों व कुप्रथाओं का त्यागकर आज की चुनौतियों को स्वीकार कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही है।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द ही ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने वर्षों स पद–दलित नारी को नवीन दिशा प्रदान की। उनके साहित्य में नारी के सम्मान और उनकी उन्नति के लिए व्याकुलता स्पष्ट देखी जा सकती है। नारी के प्रति पुरुष वर्ग की प्रताड़ना और सामाजिक अवमानना के विरूद्ध प्रेमचन्द सदैव लड़ते दिखाई देते है। नारी की मुक्ति, उन्नति, समानता और श्रेष्ठता के वे सदैव कायल थे। प्रेमचन्द ने देखा कि समाज नारी के साथ पक्षपात कर रहा है। भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, बंधन, अनाचार आदि की बलिवेदी पर नारी अपने जीवन की आहुति चढ़ा रही है। उन्होंने समाज की सभी वर्गों की नारियों का चित्रण कर उनकी चारित्रिक विशेषताओं, मानसिक अवस्थाओं तथा आन्तरिक संघर्षों के ऐसे चित्र उपस्थित किये है, मानो वे हमारे समाज की सच्ची तस्वीरें है। उनका विश्वास है, नारी स्वयं नहीं गिरती वह तो गिरने के लिए विवश की जाती है, किन्तु वह इस पतन के पाताल से उठकर गरिमा के उच्च शिखर पर आसीन होने से सक्षम है।

प्रेमचन्द के समय द्वितीय विश्व युद्ध हो रहा था। इसमें जन समाज में चहुँमुखी जागरूकता परिलक्षित हुई। नारी समाज में भी नवीन चेतना जाग्रत हुई। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नारी जाति के समान अधिकारों की माँग को बल दिया गया। शताब्दियों से नारी सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त थी। स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता एवं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से समानता का अधिकार नारी के लिए मान्य है। प्रेम के[2] आदर्शपरक रूप को प्रेमचन्द ने मात्र कल्पना बताया है। 'गोदान' में मालती के विचार प्रेम आध्यात्मिक और पवित्र है। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी जाति का स्वरूप अभिव्यक्त किया है।

आधुनिक युग की विविध परिस्थितियों के प्रभाव स्वरूप नारी जाति में चेतना जाग्रत हुई है, स्त्री शिक्षा का प्रचार और प्रसार भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। प्रेमचन्द ने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया; परन्तु उनकी दृष्टि में सार्थकता यही है कि नारी अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होकर अपने पैरों पर खड़ी हो। स्त्री शिक्षा के फलस्वरूप ही नारी जाति में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई है। प्रेमचन्द ने अशिक्षित स्त्रियों में भी राजनीतिक चेतना और आत्म बलिदान की उदात्त भावना का चित्रण किया है। 'गबन' उपन्यास में जग्गों जैसी पात्र का चरित्र प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त हुआ है; परन्तु शिक्षित स्त्रियों की विचारधारा में अपेक्षाकृत तार्किकता और परिष्कार भी है। शिक्षित स्त्रियों में हृदय परिवर्तन का चित्रण 'कर्मभूमि' में सुखदा का होता है, अन्त में स्वय प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व करती हुई जेल जाती है। प्रेमचन्द युग में विधवाओं के कल्याण के लिए अनेक प्रकार के सुधारवादी आन्दोलन हो रहे थे। स्त्री शिक्षा एवं स्त्री के अधिकारों के अभावों में विपन्न विधवाओं का जीवन नर्क तुल्य होता था। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों मे विधवा जीवन के विविध पक्षों पर विचार किया है। 'वरदान' उपन्यास में बृजरानी का वैधव्य का वर्णन किया गया है। 'निर्मला' उपन्यास में भी कल्याणी के विधवा होते ही उसके सामने यथार्थ जीवन की समस्याएँ विकराल रूप धारण कर लेती है। 'गबन' उपन्यास में लेखक ने धनी विधवा रतन के जीवन की विड़म्बनात्मक स्थिति को चित्रित किया है। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यमवर्गीय विधवा नारी की समस्या को उजागर किया है। इसमें सुमित्रा ऐसी ही पात्रा है, जो नारी अधिकारों के प्रति सचेष्ट है। वह पति की दासता सहन करना नारी जाति का अपमान समझती है। यही नहीं सुमित्रा स्त्रियों की पराधीनता का[3] कारण पुरुषों पर निर्भर होना बताती है। वह कहती है ''बेचारी औरत कमा नहीं सकती, इसलिए उसकी यह दुर्गति है। मैं कहती हूँ, अगर मर्द अपने परिवार को भरपेट खिला सकता है तो क्या स्त्री अपनी कमाई से अपना पेट नहीं भर सकती है।''

प्रेमचन्द ने उच्च, मध्यम और निम्न सभी वर्गों की नारियों का चित्रण किया है। 'गोदान' की धनिया समस्त निम्न वर्गीय नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। कुल्सुम मध्यवर्गीय स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। उच्च वर्ग की स्त्रियों में विलासिता एवं क्रोध है हालाँकि जाह्नवी और सोफिया इसके अपवाद है। 'कायाकल्प' की देवप्रिया और 'प्रेमाश्रम' में गायत्री के चरित्र इसी तरह के है। प्रेमचन्द की निम्न वर्ग की नारियों में ईमानदारी, क्षमा, दया तथा सम्मानपूर्वक जीवन बिताने की भावना विद्यमान है, पर समाज व्यवस्था उन्हें उठने नहीं देती। प्रेमचन्द के साहित्य में सिर्फ जीवन का सर्जन करने वाली ही नहीं, प्रत्युत जीवन को नेतृत्व प्रदान करने वाली स्त्रियों के भी दर्शन होते है जो नारी के नये स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस दृष्टि से प्रेमचन्द के नारी–पात्रों में साहस, स्पष्टवादिता, जीवधर्म परायणता इत्यादि मूल्य विद्यमान है।

प्रेमचन्द ने नारी की पराधीनता का कुछ दोष विवाह संस्था को दिया। वैवाहिक कुरीतियाँ नारी के जीवन को रसातल की ओर संकेत करते हुए महेन्द्र भटनागर ने लिखा है ''आर्थिक पराधीनता एवं सामाजिक और नैतिक नियमों से भी वह बुरी तरह बँधी हुई है। निम्न वर्ग की नारी एक पति को छोड़कर दूसरा पति कर सकती है। मध्य वर्ग में नारी घर की लक्ष्मी समझी जाती है, उस पर घर की प्रतिष्ठा आधारित रहती है। मध्यवर्गीय नारी को अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता हैं।'' इन्हीं संस्कारों तथा रूढ़ियों के कारण ही आज नारी अंधकार की गहरी खाई में डूबी हुई है। उसे सोचने तथा अपने बारे में फैसला लेने का अधिकार नहीं है। यदि वह विधवा है तो उसकी स्थिति ओर भी बदतर है। वह किसी से कुछ नहीं कह सकती किसी की आलोचना नहीं कर सकती, उस स्त्री को किसी भी प्रकार के सामाजिक या धार्मिक उत्सवों तीज–त्यौहारों में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है।

प्रेमचन्द नारियों के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण रखते थे। नारी से जुड़े सामाजिक सुधारों के बारे में विवेकानन्द के दृष्टिकोण का उल्लेख करते लिखा है कि ''स्वामी जी (विवेकानन्द) सामाजिक सुधारों के पक्क समर्थक थे, पर उनकी वर्तमान स्थिति से सहमत न थे। स्वामी जी का आदर्श बहुत ऊँचा था, अर्थात् निम्न श्रेणी वालों को ऊपर उठाना, उन्हें शिक्षा देना और अपनाना। उनके अनुसार ये सभी हिन्दू जाति की जड़े हैं और शिक्षित वर्ग की शाखाएँ हैं। केवल डालियों को सींचने से पेड़ पुष्ट नहीं हो सकता। उसे हरा भरा बनाना है, तो जड़े सींचनी होंगी।''

प्रेमचन्द के साहित्य का आज भी महत्त्व है कि नारी जीवन के संदर्भ में जिन सवालों को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से उठाया था, उनमें से कई अनुत्तरित है। नारी अब भी दोहरे शोषण की शिकार है। अब भी वह घर की चार दीवारी में कैद है। महानगरों के जीवन को छोड़ दिया जाये तो नारी अब भी मध्यमयुगीन मान्यताओं के शिकंजे में जकड़ी हुई सिसक रही है। नारी स्वतंत्रता को प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'मंगलसूत्र' में चित्रित किया है। उन्होंने पुष्पा (नायिका) के माध्यम से पुरुष के दासत्व से मुक्ति पाने के लिए नारी की आत्मनिर्भरता को आवश्यक माना है। वह पुरुषों की गुलामी को नकारते हुए पति से कहती है ''अगर मैं तुम्हारी आश्रिता हूँ, तो तुम भी मेरे आश्रित हो, मैं तुम्हारे घर में जितना काम करती हूँ, इतना ही काम दूसरों के घर में करूँ तो अपना निर्वाह कर सकती हूँ।''[4] इस प्रकार प्रेमचन्द ने नारी की कमजोरियों और क्षमताओं का चित्रण किया है। वे अपनी कमजोरियों का त्याग करते हुए सद्‌गुणों की ओर आकृष्ट होकर समाज की अन्य नारियों के लिए आदर्श प्रस्तुत

करती है। इसके साथ ही सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भाग लेकर राष्ट्र के विकास में अपना पूरा योगदान देती है।

प्रेमचन्द के नारी पात्रों में जागृति का भाव भी है, वह चाहे शहर की सुखदा हो या गाँव की धनिया, सभी में जागृति तथा स्वाभिमान की झलक मिलती है। धनिया एक ऐसी ग्रामीण नारी पात्र है जो हमेशा सत्य व न्याय का पक्ष लेती है। वह किसी से भी नहीं डरती, चाहे वह गाँव का मुखिया ही क्यों न हो, जमींदार हो, चाहे दरोगा ही क्यों न हो। धनिया एक आदर्श कृषक नारी और पूर्ण पतिव्रता के रूप में उभरकर आयी है। सिलिया हो, चाहे उसको विजातीय पुत्रवधू झुनिया सभी को उसका उदार भाव प्राप्त है। वह पति के रूप में होरी की आश्रिता नहीं सहचरी है। घर के कार्यों में बराबर हिस्सा लेती है। उसके माध्यम से प्रेमचन्द ने किसान मजदूर वर्ग की नारी का प्रतिनिधि चरित्र प्रस्तुत किया है।

नारी समाज में उत्थान के लिए प्रेमचन्द ने भारतीय आदर्शों को श्रेयस्कर बताया है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के बढ़ते हुए प्रभाव और उसके अनुकरण की प्रवृत्ति को प्रेमचन्द ने तुच्छ बताया है। 'गोदान' उपन्यास में मालती को जब सेवा धर्म की महत्ता का बोध होता है, तो पाश्चात्य स्वरूप को वह सदा के लिए त्याग देती है। असीम आत्म–संतोष की यह अनुभूति 'गोदान' में झुनिया को भी होती है। जब वह गोबर के साथ शहर में अपना घर बसाती है, उस समय जीवन की सार्थकता में अपनों के लिए कठिन त्याग और स्वाधीन सेवा में जो उल्लास है, उसकी ज्योति एक–एक अंग में चमकती रहती है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचन्द ने स्नेह, दया, त्याग, उपकार, ममता सहानुभूति आदि को ही आत्म संतोष और पारिवारिक सुख का नियामक माना है।

प्रेमचन्द ने नारी जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया। नारी के परम्परागत स्परूप तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से उसके परिवर्तित स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए प्रेमचन्द ने भारतीय नारी का आदर्श प्राचीन उदात्त जीवन को माना है। नारी जीवन की चरम परिणति प्रेमचन्द ने मातृ रूप से मानी है। उन्होंने लिखा ''मैं समझता हूँ कि नारी केवल माता है और उसके उपरान्त वह जो कुछ है वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्व संसार की सबसे की साधना, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और महान् विजय है।''[5]

'रंगभूमि' उपन्यास में भारतीय नारी के आदर्शों का चित्रण किया गया है, क्यों कि भारतीय नारी अपने नैसर्गिक गुणों की प्रतिमूर्त्ति है। उसमें पाश्चात्य जीवन की कृत्रिमता और असत्यता नहीं है। नारी समाज को सम्बोधित करते हुए मेहता कहते है कि संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग में मिलता है वह नारी में है। पश्चिम का आदर्श लेने वाली नारी ने पति को खो दिया है। भारतीय नारी सेवा अधिकार से सदैव गृहस्थी का संचालन करती है।

प्रेमचन्द ने नारी की सामाजिक स्थिति के प्रति गहरा असंतोष व्यक्त किया था। वे स्त्रियों की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति और स्त्री पुरुष सम्बन्धों में परिवर्तन के पक्षधर थे। उनकी दृष्टि में स्त्री का जीवन चार दीवारी में ही कैद नहीं था, लेकिन घर के बाहर भी उसकी सामाजिक स्थिति में वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ। प्रेमचन्द के साहित्य में हमें हर वर्ग, हर जाति और हर धर्म की स्त्री का चित्रण मिलता है। उस समय स्त्री को दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ रहा था। प्रेमचन्द उससे भली भाँति परिचित थे। प्रेमचन्द मानते थे कि पतित कही जाने वाली स्त्रियों में भी मानवीय गरिमा का भाव होता है, आवश्यकता उनके प्रस्फुटन की है। उनका नारी संबंधी दृष्टिकोण वस्तुगत था। उनकी सहानुभूति केवल भावना के स्तर पर नहीं थी। यही कारण है कि प्रेमचन्द के साहित्य में नारी के जितने रूप मिलते हैं उतने अन्य किसी के नहीं है। वे समाज की रूढ़ियों की शिकार है; लेकिन उनके प्रति विद्रोह नहीं करती।

प्रेमचन्द देश की आजादी में भी स्त्रियों की भागीदारी को लेकर उत्साहित थे। उनके उपन्यासों में आजादी की लड़ाई में स्त्रियों की भागीदारी को देख सकते हैं। वह इस बात को नहीं समझ पाये थे कि स्त्रियों की जिस आजादी का वह समर्थन करते है वह तभी पूरी हो सकती, जब स्त्रियों को घर, परिवार की जिम्मेदारी से कुछ हद तक मुक्ति मिलें।

प्रेमचन्द नारी सम्बन्धी उन भारतीय आदर्शों को पूरी तरह नहीं त्याग पाये जो उनकी दृष्टि में आदर्श समाज और आदर्श परिवार के लिए जरूरी है। सतीत्व, मातृत्व, सेवा और करूणा जैसे आदर्शों के समक्ष पश्चिम के आधुनिक पूँजीवादी समाजों द्वारा प्रचारित मूल्यों को भारतीय संदर्भ में पूरी तरह से लागू करने में प्रेमचन्द झिझकते थे। इसका कारण यह था कि प्रेमचन्द इन मूल्यों के दुष्परिणामों को देख रहे थे, कि किस तरह स्वतंत्रता और मुक्त भोग के नाम पर उच्छृंखलता विलासिता और दायित्व हीनता बढ़ रही है। किसी भी लेखक के लिए यह संभव नहीं है कि वह एक साथ अपने सारे संस्कारों को तोड़ दे।

प्रेमचन्द नारी पराधीनता के लिए विवाह संस्था को दोषी मानते थे। जिसकी नींव स्त्री पुरुष असमानता पर टिकी हुई थी। वे स्त्री का कन्यादान करने के कतई पक्षधर नहीं थे। हिन्दू विवाह प्रथा के साथ जुड़ी कुरीतियों के कारण स्त्री का जीवन अधिक नारकीय हो गया है। प्रेमचन्द प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार है, जो नारी के सम्मान को किसी भी तरह ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेमचन्द नारी मनोविज्ञान के जानकार नहीं है, उन्होंने हर, जाति, वर्ग, उम्र, वर्ण की स्त्रियों का कुशलता से चित्रण किया है, लेकिन यह भी है कि उन्हें सफलता ग्रामीण गरीब, मध्यमवगीय और घरेलू स्त्रियों के चित्रण में मिली है। उसका उन्होंने प्रभावशाली ढ़ग से चित्रण किया। 'कर्मभूमि' उपन्यास में सभी आन्दोलनों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की भूमिका कहीं ज्यादा प्रभावशाली रही है। ''भारतीय नारी के त्याग, मनस्तुष्टि, सौम्यता एवं संकोच आदि आत्म गरिमा के गुणों में उन्हें पाश्चात्य नारी में अभाव सा दिखता है। वास्तव में उनकी आदर्श कल्पना सुसंस्कृत नारी की है। अतिसभ्य आधुनिक की नहीं। प्रेमचन्द के अनुसार पश्चिम में तो आस्था को कुचला जाता है, स्वार्थसेवा एवं विलासिता के नित्य नये साधनों का अन्वषण किया जाता है, काम और

अर्थ ही वहाँ जीवन है, उनका धर्म भी विलास है और अध्यात्म ही भौतिक संतुष्टि है।''[6]

भारतीय नारी की प्रमुख विशेषता यह है कि भावना और आवेग उनके हृदय पर पूर्ण अधिकार करते है। ''प्रेमचन्द के नारी पात्रों की प्रमुख विशेषता यह है कि वे यथार्थ में भारतीय है। अपने जीवन को अधिक सुखी, स्वतंत्र व सम्पन्न बनाने के लिए संघर्षरत है। संघर्ष और मेहनत करती हुए भारतीय नारियाँ उनके साहित्य में मुखरित हुई है।'' इस प्रकार प्रेमचन्द नारियों के सच्चे शुभ चितंक है। वे उसे पुरुष से निश्चयः श्रष्ठ मानते है, उसी प्रकार जैसे वे प्रेम, त्याग और श्रद्धा को हिंसा, संग्राम और कलह से श्रेष्ठ समझते है।

प्रेमचन्द नारी की शक्ति, नीति और व्यवहार में आये परिवर्तन से अनभिज्ञ न थे। इसी कारण 'गोदान' में नारी चेतना का पक्ष हमारे सामने उपस्थित करते है। नारी को उच्च शिक्षा प्राप्त त्याग, भक्ति, सेवा की प्रतिमूर्त्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उसमें मातृत्व का गौरव बढ़ाया है। प्रेमचन्द ने मिस मालती के रूप में ऐसी ही सुशिक्षित और स्वतंत्र विचारों वाली नारी को प्रस्तुत किया है जो त्याग और सेवा के आदर्श को लेकर जीवन के उत्तरार्द्ध में समष्टि हितरत दिखाई देती है।

प्रेमचन्द एक जागरूक उपन्यासकार थे। कल्पना की अपेक्षा सत्य, अंतर्दृष्टि के स्थान पर बहिर्दृष्टि, मृत्यु के अपेक्षा जीवन, निराशा की अपेक्षा आशा एवं कुरूपता के स्थान पर सौंन्दर्य के उपासक थे। मानवतावादी लेखक होने के नाते उनका विकसित मनुष्यता की सद्वृत्तियों पर पूरा विश्वास है। वे लेखकों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है, जो जीवन मूल्यों को विशेष स्तर पर स्वीकार करते है और उनका रचनाकर्म सामाजिक उद्देश्य के लिए ही होता है। प्रेमचन्द के उपन्यास समाज से बहुत गहरे जुड़े है। ये उपन्यास अपने काल का बोध तो कराते ही हैं, अपने युग की माँग को भी हमारे समक्ष रखते हैं। आजादी के पूर्व के दौर में प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे व्यापक स्तर के जीवन मूल्यों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है।

प्रेमचन्द के साहित्य में नारी प्रेम का जो स्वरूप है, वह सरस, आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद है, उसके अनेक उदाहरण है। कहीं वह प्रेम माता के निर्विकार वात्सल्य के रूप में छलका है, तो कहीं पति प्रेम के रूप में प्रवाहित हुआ है। कहीं प्रेमिका की भींनी चितवन के रूप में उसने अपने प्रेमी को छला है तो कहीं वह राष्ट्रीय भावना से उद्बुद्ध होकर राष्ट्र की पावन बलिवेदी पर ही समर्पित हो गया है, हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द ही ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने वर्षों से पद–दलित नारी को नवीन दिशा प्रदान की।

सन्दर्भ

1. प्रतिज्ञा : प्रेमचन्द पृ. 68
2. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द : महेन्द्र भटनागर हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी 1957 पृ. 18
3. मंगलसूत्र : प्रेमचन्द पृ. 23
4. रंगभूमि : प्रेमचन्द पृ. 150
5. प्रेमचन्द के नारी पात्र : ओम अवस्थी नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1962 पृ. 38
6. प्रेमचन्द का नारी चित्रण : डॉ. गीता लाल पृ. 413